समाज एंव धर्म सुधार आंदोलन

इतिहासकारों ने 19 वी सदी के धर्म एंव समाज सुधार आंदोलन का विश्लेषण दो पृथक पृथक रूपों में किया है / कुछ विद्वानो का अभिमत है, की यह एक प्रकार का पुनरुत्थानवादी आंदोलन था / तो कुछ लोग इसें पाशचात्य प्रभाव में विकसित केवल एक सुधारवादी आंदोलन मानते है /

पाशचात्य विज्ञान, प्रगतिशील विचारधारा एंव तकनीकी ज्ञान को अपनाने की दृढ़ इच्छा निश्चित रूप से सुधारवादियों के मस्तिष्क में थी ,परन्तु वे भारत वर्ष की प्राचीन गौरवशाली परम्पराओं से भी उतने ही अभिप्रेरित थे /

जहाँ तक धर्म एंव समाज सुधार आंदोलन के मुख्य कारणों का प्रश्न है, उसमे प्रमुख है- पाशचात्य चिंतन, दर्शन का प्रभाव, अंग्रेजी शिक्षा का सकारात्मक पक्ष इंडी-लोजिकल स्ट्डीज का विकास एंव एशियाटिक सोसायटी जैसी संस्थाओ द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति की गवेषणा एंव ईसाई मिशनरी के विरुद्ध वैचारिक प्रतिक्रिया /

1793 ई. के चार्टर एक्ट के अनुसार इंग्लैंड की ईसाई मिशनरियों को भारत आने की अनुमति नहीं थी ,लेकिन उन्होंने चोरी-छिपे आना आरम्भ कर दिया / वैधानिक प्रस्तावों से रामपुर (श्रीरामपुर) बंगाल गाँव को बनाया / जिसपर डच अधिकार कर दिया गया और 1813 ई. के एक्ट से उनका आगमन नियमित कर दिया गया 1833 ई. के पश्चात उन्हें भारत आकर बसने की खुली छूट दे दी गई /

ईसाई मिशनरियों का प्रमुख लक्ष्य भारत में ईसाई धर्म का प्रचार तथा यहाँ के निवासियों को ईसाई बनाना था / प्रचार कार्य केवल छापेखाना पुस्तक तथा पत्रिकाओ के प्रकाशन तथा स्कूलों की स्थापना से ही संभव था / धर्म परिवर्तन के लिए ईसाइयों ने प्रचार एंव बल तथा प्रलोभन का प्रयोग किया / मिशनरी खुले बाजारों में हिन्दू धर्म तथा सामाजिक और धार्मिक रीती-रिवाजो की आलोचना करके ईसाई धर्म की सर्वोच्चता बताया करते थे / उन्होंने हिन्दुओ की धार्मिक तथा सामाजिक रीतियों के दोषो का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया /

भारत में लोगो को ईसाई बनाने के लिए मिशनरियों ने शिक्षा संस्थाओ तथा समाचार पत्रो की स्थापना की इन मिशनरियों के प्रचार का परिणाम था,की 1813 ई. के चार्टर एक्ट में शिक्षा तथा साहित्य के विकास के लिए एक लाख रुपय वार्षिक खर्च की व्यवस्था की गई / ईसाइयों ने सबसे पहले बाइबिल को कई भाषाओ में अनुवाद कराया / विभिन्न महापुरुषों द्वारा भारत के समाज और धर्म सुधार आंदोलन मे प्रमुख नेतृत्व किया गया था जिसका वर्णन निम्न प्रकार से दृष्टव्य है /

राजा राम मोहन राय

1. सती प्रथा

समाज सुधार के क्षेत्र में राजा राम राम मोहन राय का सबसे बड़ा योगदान सती प्रथा के विरोध में था /

Sabkuch.com

2. शिक्षा तथा साहित्य

19वी सदी में नया चिंतन अथवा पुर्नजागरण और अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार में घनिष्ट सम्बन्ध है/ बंगाल मे अंग्रेजी शिक्षा क प्रसार मे कलकत्ता के हिन्दू कॉलेज का योगदान अत्याधिक है । बांग्ला साहित्य के विकास में राजाराम मोहन राय का विशेष योगदान है I उन्होंने वेदांत और उपनिषद का अंग्रेजी अथवा बंगला में अनुवाद करवाया 1821 ई. में उन्होंने "संवाद कौमुदी" नामक एक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित करनी आरंभ करी थी ।

3. राजनीतिक चिंतन

राजा राम मोहन राय स्वतंत्रता प्रेमी थे I वह भारत में अंग्रेजो के आगमन को भारत की प्रगति के लिए सकारात्मक समझते थेI समाज सुधार, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य के क्षेत्र में राजा राम मोहन रॉय का योगदान सराहनीय है / वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विभिन्न क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन को एक साथ रखकर एक नई चेतना का सूत्रपात किया / राजा राम मोहन राय को समाज सुधार आंदोलन का अग्रदूत कहा जाता है /

4.ब्रह्म समाज आंदोलन का प्रभाव-

ब्रह्म सुधार आंदोलन का प्रभाव अत्यंत दूरगामी था / महाराष्ट्र में आत्माराम पांडुरंग द्वारा चलाया प्राथना समाज का आंदोलन वस्तुतः इसी आंदोलन के आदर्शो से अभिप्रेरित था / महादेव गोविन्द रानाडे द्वारा प्रार्थना समाज का प्रमुख नेतृत्व किया गया था / सर्वप्रथम उन्होंने समाज सुधार को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखा था और ऑल इंडिया रिलीजियस कांग्रेस आयोजित करवाया /

Sabakuch.com

स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज आंदोलन

स्वामी दयानंद ने वेदो को अमोघ तथा ईश्वरीय कहा / वेदो के सर्वगुण संपन्न होने से उन्हें आंतरिक उत्साह तथा प्रेरणा मिलती थी और वेदो के बताए हुए मार्ग को ही वह सत्य मानते थे /उनका मानना था की ,वेदो में निहित सत्य प्रत्येक धर्म के लोगो के उत्थान के लिए है/

स्वामी जी ने आर्य समाज की प्रथम शाखा बंबई में स्थापित की इन्होने आर्य समाज के सिद्धांतो का प्रतिपादन किया, कुछ सिद्धांत निम्न है /

1. समस्त ज्ञान का निमित्त कारण और उसके माध्यम से समस्त बोध ईश्वर है /

2. ईश्वर सर्वशक्तिमान, अद्वितीय , सर्वज्ञ, अमर तथा सर्वव्यापी है /

3. सच्चा ज्ञान वेदो में निहित है /

4.प्रत्येक व्यक्ति को सदा सत्य का पालन करना चाहिए व असत्य से दुरी बनाये रखनी चाहिए /

5. प्रत्येक व्यक्ति को सबकी उन्नति में आत्म उन्नति का पालन करना चाहिए!

6. प्रत्येक कार्य धर्मानुसार व सत्य और असत्य को विचार कर करना चाहिए /

दयानंद द्वारा चलाए गए आंदोलन ने साम्राज्यवादियों द्वारा पश्चिमी ज्ञान तथा ईसाई धर्म प्रचार के द्वारा अपने धर्म की उच्चता के प्रचार से प्रस्तुत चुनौती का उचित प्रत्युतर प्रस्तुत किया / आर्य समाज द्वारा वेदो के आधार पर हिन्दू धर्म को पुनः स्थापित करने के प्रयत्नो को पुनरुत्थानवादी आंदोलन कहा जाता है / आर्य समाज आंदोलन किसी ब्रह्म तथ्यों की अपेक्षा मूल रूप से प्राचीन भारत से प्रेरित था / स्वामी जी का इसके अतिरिक्त समाज सुधारक के रूप में निम्न योगदान रहा

1- <u>जाति व्यवस्था की आलोचना</u> -

हिन्दू समाज में जाति व्यवस्था शताब्दियों से प्रचलित रही है / एक ओर इस प्रथा को हिन्दू धर्म की प्रतिरक्षा का श्रेय है, दूसरी ओर इसको हिन्दुओ के राजनीतिक और सामाजिक पतन के लिए भी उत्तरदायी माना जाता है / 19वीं सदी में जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था, प्राचीन वर्ण व्यवस्था से भिन्न थी / स्वामी दयानंद ने जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था की कटु आलोचना की , उनके अनुसार समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर उपलब्ध होना चाहिए / यह सही है की कुछ लोग शारीरिक और मानसिक दुर्बलताओं के कारण उच्च स्तर तक पहुंच न सके , लेकिन उन्हें जन्म से ही ऐसे अवसरों से वंचित नहीं किया जाना चाहिए /

2- <u>स्त्रियों की स्थिति में सुधार</u> -

वैदिक काल में स्त्रियों को उच्च शिक्षा तथा सामाजिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने का अधिकार था /आर्य समाज द्वारा स्त्रियों की शिक्षा पर सर्वाधिक ध्यान दिया गया / आर्यसमाज ने 16 वर्ष से कम आयु की लड़की के विवाह का विरोध किया और बाल विवाह का खंडन करा /

3- <u>शुद्धि, संगठन और शिक्षा प्रसार</u> -

शुद्धि से अभिप्राय उस संस्कार से है जिससे गैर-हिन्दुओ, अछूतों, दलित वर्गों तथा धर्म परिवर्तित हिन्दुओ को पुनः हिन्दू धर्म में स्वीकार कर लिया जाता था / संगठन से अभिप्राय हिन्दुओ को अपनी रक्षा के लिए संगठित करना था, ये दोनों 20वीं सदी के प्रमुख आंदोलन थे /

स्वामी जी ने सबसे अधिक बल वेदो के अध्ययन पर दिया और भारत के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण अज्ञानता को माना था / आर्यसमाज के 10 सिद्धांतो में से एक ज्ञान का प्रसार व् अज्ञानता को दूर करने के प्रत्यन से संबंधित था /

Sabkuch.com

स्वामी विवेकांनद एंव रामकृष्ण मिशन

स्वामी विवेकांनद रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे / विवेकानंद ने अपने समस्त विचारशक्ति को अपने गुरु की विचारधारा से उत्पन्न माना /

स्वामी विवेकांनद ने अपनी विचारधारा को "प्रबुद्ध भारत" एंव उद्द्बोधन नामक पत्रों के माध्यम से सामने लाया एंव राजयोग तथा कर्मयोग जैसे पुस्तको के लेखन द्वारा भगवत् गीता के सिद्धांत एंव दर्शन की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की / शिकागो मे आयोजित विश्व धर्म सभा में स्वामी जी ने संभाषण किया , जिसके पश्चात्य भारतीय धर्म को आत्मगौरव व वैदिक धर्म की महत्ता का प्रकाशन सर्वविदित हुआ /

स्वामी विवेकांनद पहले ऐसे समाज सुधारक थे, जिन्होंने निर्धनता के प्रश्न को सामाजिक कुरीतियों से जोड़कर देखा / स्वामी जी ने राष्ट्रीय एकता का आधार साम्प्रदायिक सौहार्द्र को माना!

विवेकांनद जी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की एंव उसे दो महत्वपूर्ण कार्यो में लगाया / प्रथमतः आध्यात्मिक संवेदना का विकास एंव द्वितीय राष्ट्रीयवादी शिक्षा / स्वामी जी ने विदेशो में वेदांत सोसाइटी की स्थापना वेदांत दर्शन को प्रचारार्थ की तथा वहां से प्राप्त धन को भारत में भेजा / विवेकानंद का आध्यात्मिक एंव सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को कालान्तर में प्रखर राष्ट्रवाद का आधार बना ,अतएव उन्हें सुभाष चंद्रबोसे ने भारतीय राष्ट्रवाद के आध्यात्मिक पिता की संज्ञा दी /S

थियोसोफिकल सोसाइटी और श्रीमती एनी बेसेंट

थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना सबसे पहली 1875 ई. में अमेरिका के न्यूयॉर्क नगर में हुई / भारत में इसकी स्थापना का श्रेय रुसी महिला ब्लावत्सकी तथा अमेरिका सेना के कर्नल हेनरी स्टील ऑलकॉट को है / भारत में इन लोगो ने 1886 ई. में इस संस्था की स्थापना की / श्रीमती एनी बेसेंट एक आयरिश महिला थी / थियोसोफिकल सोसाइटी की एक सदस्य के रूप में वह 1893 में भारत आयी और यही बस गई / इन्होने हिन्दू धर्म अपनाया व वेदो और उपनिषदों में अपने विश्वास की उद्घोषणा की, इनका मानना था हिन्दू संस्कृति पश्चिमी सभ्यता की तुलना में काफी उत्कृष्ट है / इस संस्था के अनुयायियों का विश्वास था , कि सभी धर्म सच्चे है और सब मे मौलिक एकता है / इसके अनुयायी जाति, धर्म या वर्ण के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते / चूँकि यह आंदोलन प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता का समर्थन करता था, इसलिए शीघ्र ही बहुत लोकप्रिय हो गया / इस आंदोलन का व्यापक प्रभाव दक्षिण भारत के सामाजिक और धार्मिक जीवन पर पड़ा है / इस प्रकार धर्म और समाज सुधार के आंदोलन में डॉ, एनी बेसेंट और उनकी थियोसोफिकल सोसाइटी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है / भारत के सामाजिक तथा धार्मिक जीवन पर इस आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा है / आगे चलकर एनी बेसेंट ने होमरूल आंदोलन का प्रारम्भ किया जिसका भारत के सामाजिक और धार्मिक जागरण में महत्वपूर्ण स्थान है / एनी बेसेंट ने भारत कि स्वतंत्रा के लिए अपने विचार व्यक्त किये, उन्होंने "ऑल इंडिया होमरूल लीग" कि स्थापना

Sabkuch.com

1916 ई. में की / 1917 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया / इनके संबंध में जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है - "वह मेरी औऱ मुझसे पहले की पीढ़ी की एक विलक्षण विभूति थी, जिन्होंने हमे बहुत अधिक प्रभावित किया / निस्संदेह भारत के स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई "

Sabakuch.com